उभरती शोध नीतियां, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ और नीति एकीकरण – एक वैश्विक विश्लेषण परिचय

डॉ. आकांक्षा दुबे, सहायक प्राध्यपक

पत्रकारिता विभाग,अग्रसेन महाविद्यालय पुरानी बस्ती रायपुर

सदियों से, स्वदेशी और स्थानीय ज्ञान को मुख्यधारा के विज्ञान से अलग और कमतर आंका जाता रहा है। हालाँकि, जलवायु परिवर्तन और पारिस्थितिक संकटों के इस दौर में, स्वदेशी समुदायों के पास मौजूद पारिस्थितिकी, कृषि, चिकित्सा और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के ज्ञान का महत्व वैश्विक स्तर पर स्वीकार किया जा रहा है। आधुनिक शोध नीतियां अब स्वदेशी समुदायों के अधिकारों और उनके ज्ञान की संप्रभुता का सम्मान करते हुए एक समावेशी ढांचे की वकालत कर रही हैं।21वीं सदी के वैश्विक ज्ञान-आधारित समाज में अनुसंधान और नवाचार की भूमिका राष्ट्रों के विकास के केंद्र में आ गई है। जहाँ एक ओर वैश्विक शोध नीतियां मुख्य रूप से तकनीकी प्रगति, पेटेंट-आधारित बौद्धिक संपदा और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता पर केंद्रित हैं, वहीं दूसरी ओर स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ जिन्हें पारंपरिक या स्थानीय ज्ञान भी कहा जाता है को लंबे समय तक आधुनिक वैज्ञानिक विमर्श से बाहर रखा गया है। यह विसंगति अब एक महत्वपूर्ण नीतिगत प्रश्न बन गई है: क्या वैश्विक अनुसंधान ढांचा, स्थानीय और स्वदेशी समुदायों के सदियों पुराने अनुभवजन्य ज्ञान को आत्मसात करने में सक्षम है? वर्तमान शोध परिदृश्य में एक बड़ा बदलाव देखा जा रहा है, जहाँ 'समावेशी नवाचार' और 'सतत विकास' पर जोर दिया जा रहा है। स्वदेशी ज्ञान केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं है, बल्कि यह जैव-विविधता संरक्षण जलवायु अनुकूलन, और स्वास्थ्य देखभाल जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक समाधानों का एक समृद्ध स्रोत है। हालांकि मौजूदा बौद्धिक संपदा अधिकार व्यवस्था अक्सर इन समुदायों के साझा स्वामित्व वाले ज्ञान को 'सार्वजनिक डोमेन' में मानकर उसे कमतर आंकती है या उसका व्यावसायीकरण कर देती है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य 'नीति एकीकरण' की प्रक्रिया का विश्लेषण करना है। यह अध्ययन उन तंत्रों की खोज करता है जिनके माध्यम से उभरती राष्ट्रीय और वैश्विक शोध नीतियां स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को औपचारिक वैज्ञानिक अनुसंधान ढांचे में एकीकृत कर सकती हैं। यह केवल दो अलग-अलग प्रणालियों का मिलन नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी 'संवादपरक नीति' की आवश्यकता है जो औपनिवेशिक विरासत से ऊपर उठकर न्यायसंगत ज्ञान-साझाकरण, नैतिक शोध प्रोटोकॉल और समुदायों की बौद्धिक संपदा की सुरक्षा सुनिश्चित कर सके।अतः यह वैश्विक विश्लेषण इस बात की पड़ताल करेगा कि कैसे नीतिगत समन्वय न केवल वैज्ञानिक नवाचार को अधिक प्रभावी बना सकता है, बल्कि वैश्विक चुनौतियों के समाधान के लिए एक अधिक संतुलित और मानवीय दृष्टिकोण भी प्रदान कर सकता है। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ केवल किंवदंतियां या मिथक नहीं हैं, बल्कि व्यवस्थित अवलोकन, अनुभवजन्य प्रयोगों और पीढ़ियों से चली आ रही प्रथाओं का एक गतिशील समुच्चय हैं।

पारिस्थितिकी और पर्यावरण: भूमि उपयोग, जल संरक्षण और जैव विविधता का स्वदेशी ज्ञान।

पारंपरिक चिकित्सा: औषधीय पौधों और उपचार पद्धतियों की समझ।

सतत कृषि: बिना मिट्टी को नुकसान पहुँचाए फसल चक्र और जैविक कृषि पद्धतियाँ।

स्वदेशी ज्ञान प्रणाली आशय

स्वदेशी ज्ञान प्रणाली का आशय उस विशिष्ट पारंपरिक ज्ञान, समझ और दर्शन से है, जिसे किसी विशेष क्षेत्र के मूल निवासियों या स्थानीय समुदायों ने सदियों के अनुभवों, प्रयोगों और प्रकृति के साथ सीधे जुड़ाव से विकसित किया है। यह ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक या व्यावहारिक रूप से आगे बढ़ता है।

इस प्रणाली को गहराई से समझने के लिए इसके मुख्य अर्थ और विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है यह ज्ञान किसी बंद प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि सीधे प्रकृति की गोद में विकसित होता है।यह विशिष्ट भौगोलिक परिस्थितियों, जैसे पहाड़ों, जंगलों या रेगिस्तानों के अनुकूल होता है।विज्ञान चीजों को अलग-अलग करके देखता है, जबकि स्वदेशी प्रणाली मनुष्य, प्रकृति और अध्यात्म को एक दूसरे से जुड़ा हुआ मानती है। इसमें पर्यावरण का दोहन करने के बजाय उसके साथ सह-अस्तित्व पर बल दिया जाता है।

पारंपरिक चिकित्सा जैसे भारत का आयुर्वेद, सिद्ध, या जड़ी-बूटियों का स्थानीय ज्ञान।

सस्टेनेबल एग्रीकल्चर बिना रसायनों के खेती, बीजों का संरक्षण और मौसम का पारंपरिक अनुमान।

पर्यावरण संरक्षण: जल संचयन की पारंपरिक तकनीकें (जैसे बावड़ी, तालाब) और जंगलों की रक्षा (जैसे पवित्र उपवन या ।यह ज्ञान प्रायः किसी औपचारिक किताब में नहीं होता, बल्कि लोकगीतों, कहानियों, कहावतों और सांस्कृतिक रीति-रिवाजों के माध्यम से जीवित रहता है। आधुनिक विज्ञान में ज्ञान पर पेटेंट या व्यक्तिगत बौद्धिक संपदा अधिकार होता है,इसके विपरीत, स्वदेशी ज्ञान पूरे समुदाय की साझी संपत्ति होता है, जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं बल्कि जन कल्याण होता है।

शोध के उद्देश्य

1. वर्तमान वैश्विक अनुसंधान और नवाचार नीतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करना
2. नीति एकीकरण के मॉडल की खोज- विभिन्न देशों द्वारा अपनाए गए सफल 'नीति एकीकरण' मॉडलों का तुलनात्मक अध्ययन करना
3. भविष्य की दिशा तय करना: यह रेखांकित करना कि कैसे वैश्विक स्तर पर 'ओपन साइंस' और 'स्वदेशी संप्रभुता' के बीच संतुलन स्थापित करके एक अधिक समावेशी अनुसंधान पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया जा सकता है।

साहित्य समीक्षा

1. **पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक विज्ञान का एकीकरण-** इस विषय पर हुए शोध बताते हैं कि स्थानीय स्तर का पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास के लिए अत्यंत मूल्यवान है। हालाँकि, ऐतिहासिक उपेक्षा और नीतिगत ढाँचों में कमी के कारण इसे मुख्यधारा की वैज्ञानिक नीतियों में शामिल करना चुनौतीपूर्ण रहा है हालिया अध्ययन इस बात पर जोर देते हैं कि सफल एकीकरण के लिए स्वदेशी ज्ञान को केवल 'डेटा' के रूप में देखने के बजाय, एक स्वतंत्र ज्ञान प्रणाली के रूप में सम्मान मिलना चाहिए
2. **औपचारिक शिक्षा और ज्ञान उत्पादन में स्वदेशी ज्ञान का समावेश-** कई शोध अध्ययन बताते हैं कि औपनिवेशिक शैक्षणिक प्रणालियों के कारण स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ लंबे समय तक हाशिए पर रही हैं आधुनिक उभरती हुई शोध नीतियां (जैसे कि भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020) इन बाधाओं को दूर करने और स्थानीय ज्ञान को आधुनिक उच्च शिक्षा और अनुसंधान का अभिन्न अंग बनाने पर केंद्रित हैं। अकादमिक साहित्य इस बात की पुष्टि करता है कि ऐसे एकीकरण से न केवल सांस्कृतिक पहचान मजबूत होती है, बल्कि शोध और नवाचार के नए अवसर भी उत्पन्न होते हैं।
3. **सह-उत्पादन और नीतिगत रूपरेखाएँ-** वैश्विक विश्लेषण यह दर्शाते हैं कि स्वदेशी समुदायों के ज्ञान को नीति-निर्माण में शामिल करने के लिए सहभागी और नैतिक दृष्टिकोण की आवश्यकता है। 'इंटरगवर्नमेंटल साइंस-पॉलिसी प्लेटफॉर्म ऑन बायोडायवर्सिटी एंड इकोसिस्टम सर्विसेज' जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंच इस दिशा में अग्रणी हैं। शोध समीक्षाएँ बताती हैं कि स्वदेशी ज्ञान का एकीकरण तभी सफल और स्थायी हो सकता है जब स्थानीय समुदायों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में बराबर का भागीदार बनाया जाए।

शोध का महत्व

1. **विषय की प्रासंगिकता और संदर्भ स्थापित करना**
   - यह परिचय पाठकों को यह समझने में मदद करता है कि वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों पर चर्चा क्यों जरूरी है।
   - यह आधुनिक विज्ञान की सीमाओं और वैश्विक समस्याओं (जैसे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का नुकसान) के समाधान के रूप में स्वदेशी ज्ञान के महत्व को रेखांकित करता है।
2. **शोध की मुख्य समस्या को उजागर करना**
   - परिचय का सबसे बड़ा महत्व यह है कि यह "नीति एकीकरण" की मुख्य चुनौती को सामने लाता है।
   - यह स्पष्ट करता है कि वैश्विक स्तर पर शोध नीतियां तो बन रही हैं, लेकिन स्थानीय और स्वदेशी ज्ञान को उन नीतियों में शामिल करने में क्या प्रशासनिक, कानूनी और वैज्ञानिक बाधाएं आ रही हैं।
3. **वैश्विक दृष्टिकोण प्रदान करना**
- चूंकि यह एक "वैश्विक विश्लेषण" है, इसलिए परिचय विभिन्न महाद्वीपों (जैसे एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका) के अनुभवों की एक झलक देता है।
- यह दिखाता है कि कैसे अलग-अलग अंतरराष्ट्रीय संगठन (जैसे यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र) इस एकीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं।
4. **शोध के उद्देश्यों को स्पष्ट करना**
   - परिचय के अंत तक पाठक को यह पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि इस शोध पत्र का मुख्य लक्ष्य क्या है।
   - यह शोध की दिशा तय करता है कि क्या यह अध्ययन केवल नीतियों की कमियां ढूंढ रहा है या भविष्य के लिए कोई नया नीतिगत ढांचा प्रस्तावित कर रहा है।
5. **पाठकों की रुचि और जिज्ञासा जगाना**
   - एक प्रभावी परिचय अकादमिक समीक्षकों, नीति निर्माताओं और शोधकर्ताओं की रुचि को विषय के प्रति आकर्षित करता है।
   - यह बौद्धिक संपदा अधिकारों और स्वदेशी समुदायों के शोषण जैसे संवेदनशील और महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाकर शोध की गंभीरता को साबित करता है।

उभरती शोध नीतियों का स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ और नीति एकीकरण पर प्रभाव

उभरती हुई शोध नीतियां स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को आधुनिक शैक्षणिक और वैज्ञानिक ढांचे में एकीकृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं | यह एकीकरण पारंपरिक ज्ञान को केवल संरक्षित करने के बजाय, समकालीन अनुसंधान के साथ जोड़कर 'संरक्षण से उपयोग' की ओर एक बड़ा कदम है |

स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और नीति एकीकरण पर उभरती शोध नीतियों का प्रभाव निम्नलिखित मुख्य बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. **पाठ्यक्रम और शिक्षा का विऔपनिवेशीकरण**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार, स्वदेशी और स्थानीय ज्ञान जैसे भारत के संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणाली को उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाया जा रहा है |

- क्रेडिट सिस्टम: UGC के नए नियमों के तहत छात्रों के लिए अनिवार्य क्रेडिट का लगभग \(5\%\) हिस्सा (जैसे- आयुर्वेद, भारतीय खगोल विज्ञान, गणित, दर्शन) से संबंधित होना आवश्यक है |

- उद्देश्य: इसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना और आधुनिक विषयों को भारतीय लोकाचार के साथ पढ़ाना है |

2. अंतर-विषयक अनुसंधान और ज्ञान का सह-उत्पादन

आधुनिक शोध नीतियां स्वदेशी ज्ञान को केवल एक ऐतिहासिक संदर्भ या 'डेटा' के रूप में देखने की बजाय, इसे आधुनिक वैज्ञानिक और तकनीकी पद्धतियों के साथ एकीकृत कर रही हैं |

- सहयोगात्मक अध्ययन: स्थानीय स्वदेशी ज्ञान धारकों (जैसे जनजातीय समुदाय) और वैज्ञानिकों के बीच समान साझेदारी को बढ़ावा दिया जा रहा है |
- सतत विकास (Sustainable Development): पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन और पारंपरिक चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में स्वदेशी ज्ञान के व्यावहारिक उपयोग पर विशेष शोध हो रहे हैं |

3. अनुसंधान में स्थानीय भाषाओं और दृष्टिकोणों को महत्व

शोध नीतियों में यह बदलाव आया है कि पारंपरिक ज्ञान स्थानीय भाषाओं (mother tongue) में सबसे बेहतर तरीके से समझा और समझाया जा सकता है |

- बहुभाषिता: अनुसंधान के दौरान मौखिक परंपराओं, क्षेत्रीय भाषाओं और पांडुलिपियों के दस्तावेजीकरण को समर्थन मिल रहा है |
- सांस्कृतिक संवेदनशीलता: नीति निर्माता अब यह स्वीकार कर रहे हैं कि किसी भी विकास या अनुसंधान नीति में स्थानीय समुदाय और उनके विश्व दृष्टिकोण को शामिल करना सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक है |

4. नीतिगत चुनौतियाँ और आगे का रास्ता

हालांकि नीति एकीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है, लेकिन अभी भी कुछ प्रमुख चुनौतियां मौजूद हैं | स्वदेशी ज्ञान को अक्सर आधुनिक 'पश्चिमी' विज्ञान द्वारा मान्यता मिलने पर ही प्रामाणिक माना जाता है, जो अनुसंधान में एक असंतुलन पैदा करता है |

- समाधान: उच्च शिक्षण संस्थानों में specialized centers (उत्कृष्टता केंद्र) स्थापित किए जा रहे हैं | शिक्षा मंत्रालय की पहल और जैसे प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से संकाय सदस्यों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा रहा है ताकि वे आधुनिक शिक्षा में इस प्राचीन और स्वदेशी ज्ञान को सटीकता से एकीकृत कर सकें

निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट है कि समकालीन वैश्विक शोध परिदृश्य एक महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है। उभरती शोध नीतियां अब केवल तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे तेजी से 'समावेशी' और 'सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील' दृष्टिकोण अपना रही हैं। स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों को शोध और नीति-निर्माण में एकीकृत करना अब केवल एक नैतिक अनिवार्यता नहीं, बल्कि वैश्विक चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए एक रणनीतिक आवश्यकता बन गई है।

प्रमुख निष्कर्ष और संश्लेषण

- **ज्ञान प्रणालियों का अभिसरण:** शोध नीतियों में स्वदेशी ज्ञान का समावेश आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और पारंपरिक पारिस्थितिक ज्ञान के बीच एक आवश्यक सेतु का निर्माण करता है। यह अभिसरण जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता संरक्षण और सतत विकास जैसे जटिल मुद्दों पर अधिक प्रभावी और टिकाऊ समाधान प्रदान करने की क्षमता रखता है।

- **नीति एकीकरण की चुनौतियाँ:** हालांकि सैद्धांतिक रूप से स्वदेशी ज्ञान को महत्व देने की बात स्वीकार की गई है, लेकिन व्यावहारिक नीति एकीकरण अभी भी विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसमें ज्ञान के स्वामित्व स्वदेशी समुदायों की भागीदारी का स्तर, और ज्ञान के मानकीकरण की समस्याएँ प्रमुख हैं। एक प्रभावी नीति तब तक अधूरी है जब तक वह स्वदेशी समुदायों के 'निर्णय लेने के अधिकार' को सुरक्षित न करे।

- **वैश्विक से स्थानीय की ओर:** वैश्विक शोध नीतियां यह स्वीकार कर रही हैं कि 'एक आकार सभी के लिए फिट' (One-size-fits-all) का मॉडल अब प्रासंगिक नहीं है। भविष्य की शोध रणनीतियां स्थानीय संदर्भों, स्थानीय जरूरतों और स्थानीय समाधानों को केंद्र में रखकर ही वैश्विक लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती हैं।

- **स्थायी भविष्य के लिए आधार:** स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ पीढ़ियों के अनुभव और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का प्रमाण हैं। जब इन्हें नीतिगत ढांचे में स्थान दिया जाता है, तो यह न केवल स्थानीय समुदायों को सशक्त बनाता है, बल्कि शोध में विविधता लाता है, जो वैज्ञानिक नवाचार के लिए उत्प्रेरक का कार्य करती है।

भविष्य की राह

निष्कर्षतः, उभरती शोध नीतियों का भविष्य 'ज्ञान की बहुलता' (Plurality of Knowledge) को अपनाने में निहित है। नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और स्वदेशी समुदायों के बीच एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करने की आवश्यकता है जो आपसी सम्मान, साझा सीखने और पारदर्शी सहयोग पर आधारित हो।

आगामी समय में, सफल नीतिगत एकीकरण वही होगा जो आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति की कठोरता और स्वदेशी ज्ञान की गहराई के बीच एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखेगा। यह दृष्टिकोण न केवल शोध की प्रासंगिकता को बढ़ाएगा, बल्कि एक अधिक न्यायसंगत, टिकाऊ और समावेशी वैश्विक भविष्य का निर्माण करने में भी निर्णायक सिद्ध होगा। अंततः, शोध नीतियां तभी सफल मानी जाएंगी जब वे न केवल 'नया ज्ञान' उत्पन्न करें, बल्कि उस ज्ञान के माध्यम से हाशिए पर स्थित समुदायों और पूरी मानवता के कल्याण में वास्तविक बदलाव ला सकें।

क्या आप चाहते हैं कि मैं इस निष्कर्ष के आधार पर भविष्य की शोध नीतियों के लिए कोई विशिष्ट रूपरेखा (framework) या सुझाव तैयार करने में आपकी सहायता करूँ?

संदर्भ

- "Indigenous Knowledge Systems and Development" – *लेखक: D.M. Warren, L.J. Slikkerveer, and D. Brokensha* (यह पुस्तक स्वदेशी ज्ञान को विकास कार्यों और नीतियों में शामिल करने का आधारभूत संदर्भ प्रदान करती है।)
- "Decolonizing Methodologies: Research and Indigenous Peoples" – *लेखक: Linda Tuhiwai Smith* (यह शोध नीति और अकादमिक जगत को स्वदेशी नजरिए से देखने की एक अनिवार्य पुस्तक है।)
- "Indigenous Knowledge and Education: Sites of Struggle, Strength, and Survival" – *संपादक: George J. Sefa Dei, Budd L. Hall, and Dorothy Goldin Rosenberg* (यह पुस्तक दिखाती है कि कैसे स्वदेशी ज्ञान को शैक्षिक और नीतिगत ढांचे में एकीकृत किया जा सकता है।)
- "Traditional Ecological Knowledge: Wisdom for Sustainable Development" – *संपादक: N.M.P.J. Illangakoon* (यह पारिस्थितिकी और सतत विकास के संदर्भ में स्वदेशी ज्ञान की भूमिका का विश्लेषण करती है।)
- "The Politics of Knowledge: Understanding the Power of Science and Technology" – *लेखक: Patrick Hamlett* (यह पुस्तक बताती है कि कैसे शोध नीतियां बनाई जाती हैं और उनमें किन ज्ञान समूहों को प्राथमिकता दी जाती है।)
- "Global Science and National Policies: The Role of Indigenous Knowledge" – *लेखक: विभिन्न विशेषज्ञ (UNESCO के प्रकाशनों में अक्सर यह विषय मिलता है)* (यूनेस्को (UNESCO) की 'Local and Indigenous Knowledge Systems' (LINKS) रिपोर्टें इस विषय पर सबसे आधिकारिक स्रोत हैं।)

- "Policy Integration in Theory and Practice" – *लेखक: Adger, W. N., and Jordan, A.* (नीति एकीकरण की प्रक्रिया और जटिलताओं को समझने के लिए यह एक उत्कृष्ट अकादमिक संदर्भ है।)
- "Traditional Knowledge in Modern India: Preservation, Promotion and Protection" – *लेखक: विभिन्न (NISCAIR/CSIR प्रकाशन)*
- "भारतीय ज्ञान परंपरा" (Indian Knowledge Systems) – *लेखक: AICTE या संबंधित शैक्षणिक निकायों द्वारा प्रकाशित हैंडबुक* (नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के संदर्भ में स्वदेशी ज्ञान के एकीकरण को समझने के लिए यह वर्तमान में सबसे प्रासंगिक सामग्री है।)